ओ३म्

सत्यार्थ प्रकाश ग्रन्थमाला

समुल्लास 2 पर आधारित

आदर्श माता पिता

बच्चों के निर्माता

प्रकाशक : आर्य समाज, अजमेर मूल्य 3.00

Scanned with CamScanner

प्राचार्य दत्तात्रेय वाब्ले (आर्य) द्वारा संपादित
सत्यार्थ प्रकाश ग्रन्थमाला के 15 पुष्प

भाग	नाम	लेखक का नाम	मूल्य
1.	ईश्वर एक नाम अनेक	प्रो. बुद्धि प्रकाश आर्य	3.00
2.	आदर्श माता–पिता	प्रो. राजेन्द्र जिज्ञासु	3.00
3.	शिक्षा और चरित्र निर्माण	प्रो. भूदेव शास्त्री	4.00
4.	गृहस्थाश्रम का महत्त्व	आचार्य ओंकार मिश्र प्रणव	3.00
5.	संन्यासी कौन और कैसे हो ?	रासासिंह विद्यावाचस्पति	3.00
6.	राज्य व्यवस्था	प्रो. प्रशान्त कुमार वेदालंकार	5.50
7.	ईश्वर और वेद	डॉ. सूर्यदेव शर्मा, डी. लिट्	4.00
8.	जगत् की उत्पत्ति	डा. स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती	4.00
9.	स्वर्ग और नरक कहाँ है ?	पं. यशपाल, आर्य बन्धु	4.00
10.	क्या चौके चूल्हे में धर्म है ?	प्रो. देव शर्मा वेदालंकार	3.00
11.	हिन्दू धर्म की निर्बलता	प्रो. भवानीलाल भारतीय	4.00
12.	बौद्ध और जैन मत	पं. मंजुनाथ शास्त्री	3.00
13.	वेद और ईसाई मत	श्री रामस्वरूपजी रक्षक	3.00
14.	इस्लाम और वैदिक धर्म	डा. श्रीराम आर्य	4.00
15.	सत्य का अर्थ तथा प्रकाश	प्राचार्य दत्तात्रेय वाब्ले	3.00

आचार्य दत्तात्रेय जी आर्य द्वारा लिखित पुस्तकें

1.	आचार संहिता	1.00
2.	आर्य समाज हिन्दू धर्म का सम्प्रदाय नहीं	50.00
3.	हमारी राष्ट्रीयता का आधार	2.00
4.	देश धर्म और हिन्दू समाज को आर्य समाज की देन	1.00
5.	मेरी तीसरी विदेश यात्रा के संस्मरण	6.00
6.	आर्य शिक्षण संस्थाओं का भविष्य	5.00
7.	दा आर्यसमाज (The Arya Samaj)	2.00
8.	आर्य शिक्षण संस्थाओं की परिचय निर्देशिका	12.00
9.	आर्य समाज का वर्तमान और भविष्य	10.00
10.	The Arya Samaj Hindu without Hinduism	125.00
11.	आर्य समाज के पुनर्गठन की आवश्यकता	8.00
12.	कर्मवीर पं. जियालाल का संक्षिप्त जीवन चरित्र	5.00

अन्य प्रकाशन

1.	आर्य समाज अजमेर का इतिहास	50.00
2.	सांस्कृतिक कार्यक्रम पथ दर्शिका	30.00
3.	अजमेर की आर्य शिक्षण संस्थायें	3.00
4.	धर्म शिक्षा (भाग 1 से 11 तक) सैट (20% कमीशन)	100.00
5.	सत्यार्थ प्रकाश ग्रन्थ माला (सैट) (20% कमीशन)	20.00

प्राप्ति स्थान **आर्य समाज, अजमेर**

Scanned with CamScanner

ओ३म्

सत्यार्थ प्रकाश ग्रन्थमाला—भाग २

आदर्श माता पिता
बच्चों के निर्माता

लेखक :

प्रो. राजेन्द्र जिज्ञासु

दयानन्द कॉलेज़, अबोहर (पंजाब)

सम्पादक :

दत्तात्रेय आर्य

पू. प्रिंसिपल, दयानन्द स्नातकोत्तर कॉलेज, अजमेर

प्रकाशक : **आर्य समाज, अजमेर**

पंचम संस्करण

1999 | प्रतियां 2000 | मूल्य : 3.00

Scanned with CamScanner

डॉ. सूर्यदेव शर्मा का प्रशंसनीय अनुदान

आर्य समाज के जाने माने विद्वान् और प्रसिद्ध शिक्षा शास्त्री तथा आर्य समाज अजमेर के दीर्घकालीन यशस्वी मंत्री डॉ. सूर्यदेव शर्मा, शास्त्री साहित्यालंकार, एम. ए. एल. टी. डी लिट् ने 1981 में सत्यार्थ प्रकाश शताब्दी के अवसर पर इस ग्रन्थमाला के प्रथम संस्करण के लिये 12 हजार रुपये तथा आर्य समाज अजमेर की 1982 में शताब्दी के उपलक्ष में प्रकाशित इस द्वितीय संस्करण के लिये 10 हजार रुपये, इस प्रकार कुल 22 हजार (बाईस हजार रुपये) रुपये की राशि दान में देकर ऋषि दयानन्द के अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार में अनुकरणीय सहयोग दिया है। आर्यसमाज अजमेर और मैं अपनी ओर से उनका हार्दिक अभिनन्दन करता हूँ।

दत्तात्रेय आर्य
प्रधान
आर्य समाज, अजमेर

मुद्रक : श्री आर्य प्रिण्टर्स, बाबू मोहल्ला, केसर गंज,
अजमेर

Scanned with CamScanner

प्रस्तावना

बच्चे देश की भावी आशाएँ हैं, उन्हीं पर समाज का भविष्य निर्भर है। इसलिये देश और समाज का निर्माण उनके ही हाथों में है किन्तु इस प्रकार के बच्चों को बनाने का पहला और मुख्य उत्तरदायित्व जिन पर है वे तो स्वयं उनके माता पिता ही हैं और विशेष कर उनकी माता उनकी निर्माता है। ऋषि दयानन्द के अनुसार अपनी सन्तान के प्रति यह उनका महान उत्तरदायित्व उनके माता व पिता तभी निभा सकते हैं जब कि वे स्वयं स्वस्थ, शिक्षित और सदाचारी हों। बाल विवाह आदि का निषेध करते हुए उन्होंने कहा था कि जब माँ बाप स्वयं बच्चे अर्थात् अल्पवयस्क हों तो उनकी सन्तान योग्य कैसे हो सकती है ? उनके अनुसार माता पिता के उपदेशों से अधिक उनके अपने जीवन और व्यवहार का बच्चों पर अधिक चिरस्थाई प्रभाव होता है, इसलिये योग्य माता पिता जहाँ बच्चों के सबसे बड़े हितैषी होते हैं, वहाँ जो माता–पिता अपनी संतान की उचित शिक्षा दीक्षा और विशेषकर उनके व्यवहार और आचरण की उपेक्षा करते हैं वे उनके ही बड़े शत्रु समझने चाहिये।

आजकल हमारे देश में भाषाओं का विवाद गम्भीर रूप धारण कर रहा है। ऋषि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश के इसी समुल्लास में ऐसे विवाद का निराकरण करने के लिये इस आधुनिक शिक्षा सिद्धान्त का प्रतिपादन किया है कि लड़के लड़कियाँ जब 5 वर्ष के हों तभी से उन्हें देवनागरी के साथ अन्य देशों की भाषाओं के अक्षरों का भी अभ्यास कराना चाहिये। इस प्रकार जहाँ स्वामीजी ने हिन्दी और मातृ भाषा द्वारा शिक्षा के सिद्धान्त का समर्थन किया है वहाँ अंग्रेजी आदि अन्य उपयोगी भाषाओं का बचपन से ही अध्ययन करने का उपदेश दिया है, क्योंकि बच्चे अनेक भाषायें आसानी से सीख सकते हैं।

Scanned with CamScanner

छोटे बच्चों को भूत, प्रेत, चुड़ैल आदि का डर दिखाने की जो परिपाटी है, स्वामीजी ने इन सब को भी कल्पित बताकर उनका निषेध किया है क्योंकि बचपन में निराधार भय के ऐसे संस्कारों के कारण बड़े होने पर इन बच्चों में अन्धविश्वास के साथ भय और कायरता उत्पन्न होती है।

इस पुस्तिका के लेखक स्वयं एक अनुभवी शिक्षक तथा अभिभावक हैं। सत्यार्थ प्रकाश के द्वितीय समुल्लास के आधार पर उन्होंने सन्तान की शिक्षा दीक्षा तथा सदाचरण के प्रति माता–पिता के उत्तरदायित्व का विवेचन किया है।

दत्तात्रेय आर्य
सम्पादक

लेखक का संक्षिप्त परिचय

इस पुस्तिका के लेखक आर्य जगत् के यशस्वी, कर्मठ समाजसेवी प्रो. राजेन्द्र 'जिज्ञासु' हैं। आजकल आप दयानन्द कॉलेज, अबोहर (पंजाब) में व्याख्याता हैं। उनकी यह लघु पुस्तिका सत्यार्थ–प्रकाश के द्वितीय समुल्लास पर सुबोध शैली में वर्णित है।

Scanned with CamScanner

आदर्श माता-पिता

महर्षि मानव मात्र को शिक्षा व ज्ञान प्राप्ति का अधिकार देते हैं। महर्षि प्राथमिक शिक्षा को अनिवार्य मानते हैं । बाद की शिक्षा ऐच्छिक है। वह पात्रता व रुचि पर निर्भर करती है। आधुनिक युग में उन्होंने ही सर्वप्रथम संसार को ये विचार दिये।

संसार में सुधारकों, विचारकों, लेखकों, नेताओं व तत्ववेत्ताओं ने समय–समय पर मनुष्य जाति के सुधार व उपकार के लिए अपने विचार दिये हैं। अपने–अपने ढंग से छोटे बड़े सुधारक प्रयत्न करते रहे हैं। अपने–अपने देश व समाज किंवा समुदाय के लोगों के आचार व्यवहार को ठीक करने के लिए विचारकों ने संदेश–उपदेश दिया। अच्छे व्यक्तिओं से अच्छा समाज बनता है और अच्छे समाज से व्यक्ति अच्छे बनते हैं। बुराइयों के रोकने व भले मनुष्यों के निर्माण के लिए महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने कालजयी ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश में एक रूपरेखा रखी है।

महर्षि दयानन्द ने जो विचार दिये हैं, ये कोई नये नहीं हैं। ये वेदोक्त विचार हैं। ये पुराने होते हुए भी सदा नूतन हैं। जैसे सूर्य कभी भी पुराना नहीं होता, नित्य नया रहता है। इसकी उपयोगिता में न तो कमी हुई है, न कभी होगी। ऐसे ही ऋषि के वेदोक्त विचार काल व देश की सीमा से बंधे हुए नहीं हैं। जिस जीवन पद्धति का ऋषि ने प्रचार किया है, वह किसी देश विशेष व वर्ग विशेष के लिए नहीं है। सम्पूर्ण मानव समाज इस जीवन पद्धति को अपना कर लाभान्वित हो सकता है।

Scanned with CamScanner

सत्यार्थप्रकाश के द्वितीय समुल्लास में ऋषि ने सन्तान के शिक्षण प्रशिक्षण की एक विधि बतलाई है। यदि इस साँचे में सन्तान को ढाला जावे और इस ढाँचे में उन्हें पाला जावे तो मानव जाति का भविष्य स्वर्णिम बन जावे। महर्षि की यह मान्यता है कि बालक–बालिकाओं पर माता का विशेष प्रभाव पड़ता है। बच्चों का शिक्षण प्रशिक्षण विद्यालय, गुरुकुल, नर्सरी, के. जी. से आरम्भ नहीं होता। ऋषि बालक की शिक्षा जन्म के बाद नहीं मानते। उनका कथन है कि माता के गर्भ में ही, जन्म से पूर्व बालक–बालिकाओं की शिक्षण प्रशिक्षण प्रक्रिया आरम्भ हो जाती है। शिक्षा शास्त्र को ऋषि जी की यह एक ठोस देन है। श्री महाराज का कथन है कि माता के खान पान, व्यवहार सबका गर्भस्थ बालक पर प्रभाव पड़ता है। यह प्रभाव शारीरिक एवं मानसिक दोनों प्रकार का होता है। आधुनिक वैज्ञानिक, मनोवैज्ञानिक व डाक्टर ऋषि के कथन की पुष्टि करते हैं[1]। कोई देश व समाज या व्यक्ति अपनी दुर्बलताओं के कारण ऋषि के आदेशानुसार सन्तान का निर्माण व प्रशिक्षण भले ही न करे परन्तु कल्याण मार्ग यही है, इसमें तो अब दो मत हैं नहीं।

महर्षि सत्यार्थप्रकाश एवं संस्कारविधि ग्रन्थ में शतपथ ब्राह्मण तथा छान्दोग्य उपनिषद् के प्रमाण देकर अपने ओजस्वी शब्दों में एक सनातन सत्य की घोषणा करते हैं :–

मातृ मान् पितृ मानाचार्यवान् पुरुषोवेद ।

1. Health and Longevity तथा Marriage and Married Life देखिए।

Scanned with CamScanner

'वस्तुतः जब तीन उत्तम शिक्षक, अर्थात् एक माता, दूसरा पिता और तीसरा आचार्य होवे, तभी मनुष्य ज्ञानवान् होता है। वह कुल धन्य ! वह सन्तान बड़ी भाग्यवान् ! जिसके माता और पिता धार्मिक विद्वान् हों। जितना माता से सन्तानों को उपदेश और उपकार पहुँचता है, उतना किसी से नहीं।

नारी सम्बन्धी अवैदिक मत

यहाँ यह लिखने की विशेष आवश्यकता नहीं कि आचार्य दयानन्द नारी की निन्दा करने वालों से कतई सहमत नहीं। Saint JAROME सन्त जैरम ने लिखा है कि नारी सारे पाप का मूल है।[2]

हमारे देश में भी नारी को नरक का द्वार एवं **'अधम से अधम'** कहने वाले कई विद्वान् हुए हैं परन्तु ये सब कुछ वेद विरुद्ध अस्वाभाविक एवं सृष्टि–नियम के विपरीत हैं, अतः ऋषि को यह विचार अमान्य है।

यहाँ हम यह भी बता दें कि वेद की भाषा में नारी के लिए प्रयुक्त होने वाले शब्द सुन्दर व सार्थक हैं, अन्य भाषाओं में नारी के लिए प्रयोग में आने वाले शब्द आपत्तिजनक हैं तथा जन, 'जननी', मस्तूरात' 'औरत' आदि। यहाँ इन शब्दों की विवेचना स्थान अभाव के कारण हम नहीं कर सकते । इसके विपरीत वैदिक भाषा के देवी आदि शब्दों का अर्थगौरव सब ज्ञान पिपासु सज्जनों पर प्रकट ही है।

---

2. द्रष्टव्य Christianity in India Page 73.

Scanned with CamScanner

माता क्या करे ?

माता की महिमा का वर्णन ऋषि के शब्दों में आगे और पढ़िए :– "जैसे माता सन्तानों पर प्रेम (और) उनका हित करना चाहती है, उतना अन्य कोई नहीं करता।"

ऋषि की दृष्टि में शिक्षा के लिए माता का मुख्य दायित्व सन्तान का सुशील बनाना है। ऋषि के हृदय से अनायास एक ध्वनि निकलती है :–

"धन्य वह माता है कि जो गर्भाधान से लेकर जब तक पूरी विद्या न हो तब तक सुशीलता का उपदेश करे।" आज के युग में दशों दिशाओं में एक चीत्कार सुनाई दे रही है कि मनुष्य में मनुष्यता का लोप होता जा रहा है। महर्षि दयानन्द अपने एक पत्र में एक मार्मिक बात लिखते हैं कि "संसार में सब पदार्थों का मिलना सुलभ है परन्तु श्रेष्ठ मनुष्य का मिलना दुर्लभ है।" जनसंख्या बढ़ रही है और मनुष्यों का अकाल होता जा रहा है। भले मनुष्यों के बिना संसार में सुख–शान्ति कैसे हो सकती है ? इसलिए ऋषि जी सुशीलता पर बल देते हैं।

अन्न कैसा हो ?

"अन्न का मन पर 'प्रभाव' पड़ता है" ऐसी ऋषि की मान्यता है। मनुष्य की प्रवृत्ति व व्यवहार उसके आहार से प्रभावित होते हैं। अन्न का प्रभाव केवल शरीर पर ही नहीं पड़ता है। ऋषि लिखते हैं :–

Scanned with CamScanner

"बुद्धि–बल–रूप–आरोग्य–पराक्रम–शान्ति आदि गुणकारक द्रव्यों ही का सेवन स्त्री करती रहे, कि जब तक सन्तान का जन्म न हो।"

बालक को जन्म देने वाली स्त्री की प्रसन्नता पर भी ऋषि बल देते हैं। आज पश्चिम में भी मानसिक रोगों के विशेषज्ञ इस बात की साक्षी देते हैं कि खान पान की इस आर्ष विधि की अवहेलना के कारण मानसिक रोग बढ़ रहे हैं। महर्षि की शिक्षा में संयम का विशेष स्थान है। उनका कथन है कि गृहस्थों में संयम होगा तो "उनके उत्तम सन्तान, दीर्घायु, बल, पराक्रम की वृद्धि होती ही रहेगी।"

मानव जाति का उज्जवल भविष्य इस बात की माँग करता है कि संसार के मनुष्य सभ्य बनें। मनुष्य सभ्य होंगे तो अज्ञान, अन्याय व अभाव.................................इस त्रय ताप से संसार की रक्षा की जा सकती है और यदि मनुष्य ही असभ्य हों तो कितने उपाय करलो, कितनी योजनाएं बना लो, मनुष्य जाति इस त्रय ताप से संतप्त ही रहेगी। ऋषि जी लिखते हैं "बालकों को माता–पिता सदा उत्तम शिक्षा करें। जिससे सन्तान सभ्य हों और किसी अंग से कुचेष्टा न करने पावें।"

ऋषि का बल इस बात पर है कि जीवनरूपी भवन की नींव दृढ़ व स्थिर हो। सन्तान का निर्माण इस रीति से हो कि वह "अयोग्य व्यवहार" से बचकर प्रतिष्ठा को प्राप्त हो।

"व्यर्थ क्रीड़ा, रोदन, हास्य, लड़ाई, हर्ष, शोक, किसी पदार्थ में लोलुपता, ईर्ष्या–द्वेषादि न करें।"

Scanned with CamScanner

संयम

संयम को ऋषि जी जीवन का आधार व श्रृंगार मानते हैं। अतः इस विषय में वह बालक–बालिकाओं को बड़ी सावधानी रखने का निर्देष देते हैं। आदर्श नागरिक को महर्षि ने 'सत्य पुरुष' की संज्ञा दी है। संसार में आज उपाधियों से विभूषित तो असंख्य जन है। ज्ञान का विस्फोट हो रहा है फिर भी संसार दुःखी है। क्यों ? इसलिए कि सब कुछ होते हुए भी संसार में सत्य पुरुषों का लोप–सा हो गया है।

भूत-प्रेत

महर्षि माता–पिता को निर्देश देते हैं – "सदा सत्य भाषण, शौर्य, धैर्य, प्रसन्नवादन आदि गुणों की प्राप्ति जिस प्रकार हो, करावें।"

"और जो–जो विद्याधर्म विरुद्ध भ्रान्तिजाल में गिराने वाले व्यवहार हैं, उनका भी निर्देष कर दें। जिससे भूत–प्रेत आदि मिथ्या बातों का विश्वास न हो। दुर्भाग्य की बात यह है कि जब ऋषि के इस कालजयी ग्रन्थ की रचना व प्रकाश हुआ, उस समय अमरीका के कुछ सुशिक्षित समझे जाने वाले प्रतिष्ठित महानुभावों ने धर्म के नाम पर भूत–प्रेत का बड़ा प्रचार किया। इस भ्रान्तिपूर्ण प्रचार से विश्व का अहित ही होता है। आचार्य दयानन्द भूत, प्रेत, शाकिनी, डाकिनी आदि के प्रचार को भ्रमजाल समझते हैं।

महर्षि लिखते हैं :– "अज्ञानी लोग वैद्यक शास्त्र वा पदार्थ विद्या के पढ़ने सुनने और विचार से रहित होकर सन्निपात ज्वरादि

Scanned with CamScanner

शारीरिक और उन्मादादि मानस रोगों का नाम भूत–प्रेतादि धरते हैं।"

इसका परिणाम क्या होता है :– "अपने धन का नाश, सन्तान आदि की दुर्दशा और रोगों को बढ़ाकर दुःख देते फिरते हैं।"

महर्षि के इस ग्रन्थ का एक चमत्कार यह भी है कि उसने फलित ज्योतिष के अंधविश्वास से संसार को सावधान कर दिया है। असंख्य लोगों को ज्ञान–ज्योति मिली है। जैसी यह पृथ्वी जड़ है, वैसे ही सूर्य्यादि लोक हैं। वे ताप और प्रकाशादि से भिन्न कुछ भी नहीं कर सकते। क्या ये चेतन हैं जो क्रोधित होकर दुःख और शान्त हो कर सुख दे सकें।

ग्रहों के फल की बात एक अंधविश्वास से बढ़कर कुछ भी नहीं। संसार में सुख–दुःख सब पाप पुण्यों का फल है। ऋषि ने फलित ज्योतिष को झूठा घोषित किया है। विवेकशील पाठकों को इस विषय में कुछ और जानने की इच्छा हो तो श्री जनार्दन जोशी लिखित 'ज्योतिषचमत्कार' पं. गंगा प्रसाद उपाध्याय लिखित 'Superstition' तथा श्री पं. मनसाराम 'वैदिक तोप' लिखित 'फलित ज्योतिष मीमांसा' पुस्तक का अध्ययन करें।

इतिहास इस बात का साक्षी है कि इस फलित ज्योतिष के अन्ध विश्वास के कारण भारत को कई बार आक्रान्ताओं के हाथों पराजय का मुँह देखना पड़ा। राणा सांगा के पराभव व बाबर की विजय का एक कारण यही था कि राणा ज्योतिषियों के जाल में फँस कर समय पर चढ़ाई न कर पाया। राजा लक्ष्मणसेन भी इसी अन्धविश्वास के कारण मुठ्ठी भर तुर्कों से अपमानित हुआ। भारत

Scanned with CamScanner

के पतन के कई कारण हैं। एक मुख्य कारण यह फलित ज्योतिष भी है।

महर्षि जन्मपत्र को 'शोकपत्र' की संज्ञा देते हैं। धन्य है वे व्यक्ति व धन्य हैं वे कुल जिनका जन्मपत्रों में विश्वास नहीं।

किनकी संतान विद्वान् व सभ्य ?

इस प्रश्न का उत्तर ऋषि के शब्दों में पढ़िए :– "उन्हीं की सन्तान विद्वान्, सभ्य और सुशिक्षित होती हैं जो पढ़ाने में सन्तानों को लाड़न कभी नहीं करते, किन्तु ताड़ना ही करतें रहते हैं।"

यहां यह मत भूलिए कि ऋषि ताड़ना पर बल देते हैं, वह मारना नहीं कहते। प्राचीन शिक्षा पद्धति व मध्यकालीन पद्धति में यह एक भेद है। मध्य काल में शिक्षक शिष्यों की बहुत पिटाई करने में अपनी बड़ाई समझते थे। पिटाई से कोई अधिक पढ़ाई नहीं हो जाती ।

ध्यान रहे

महर्षि एक चेतावनी भी देते हैं :– "परन्तु माता–पिता तथा अध्यापक लोग ईर्ष्या द्वेष से ताड़न न करें, किन्तु ऊपर से भय प्रदान और भीतर से कृपा दृष्टि रखें।"

महर्षि के इन शब्दों पर किसी प्रकार की टिप्पणी की आवश्यकता नहीं। सब बुद्धिमान्, अनुभवी व कर्त्तव्यनिष्ठ माता–पिता व अध्यापक लोग महर्षि के इस कथन की गम्भीरता व सत्यता को स्वीकार करते हैं।

Scanned with CamScanner

महर्षि के ग्रन्थ 'आर्याभिविनय' की भूमिका पढ़ने से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि धर्म--कर्म का फल 'व्यवहार शुद्धि' है। यदि व्यक्ति का व्यवहार शुद्ध नहीं तो वह धार्मिक कहलाने का अधिकारी नहीं। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए बड़ी सावधानी व सतर्कता की आवश्यकता है। ऋषि का आदेश है:–

"जैसी अन्य शिक्षा की वैसी चोरी–जारी, आलस्य–प्रमाद, मादक–द्रव्य, मिथ्या–भाषण, हिंसा, क्रूरता, ईर्ष्या–द्वेष, मोह आदि दोषों के छोड़ने और सत्याचार के ग्रहण करने की शिक्षा करें, क्योंकि जिस पुरुष ने जिसके सामने एक बार चोरी–जारी, मिथ्या भाषणादि कर्म किया, उसकी प्रतिष्ठा उसके सामने मृत्यु पर्यन्त नहीं होती। सद्गुणों के ग्रहण व दुर्गुणों के परित्याग के बिना न तो आत्म विकास, न आत्मशान्ति ही सम्भव है। आर्य जीवन पद्धति एवं शिक्षा शास्त्र में जहां पराक्रम पर बल दिया गया है, वहां आलस्य प्रमाद के परित्याग को अनिवार्य बनाया गया है। जिसका मित्र प्रमादी हो, उसको फिर किसी शत्रु की आवश्यकता नहीं रहती। ईश्वर की कल्याणी वाणी वेद की एक ऋचा में बड़ा सरल उपदेश है :– 'मा नी निद्रा ईशत मोत जल्पिः' * अर्थात् बकवास और प्रमाद हम पर शासन न करें। राष्ट्रों व जातियों के ह्रास व नाश का एक मुख्य कारण प्रमाद है। ऋषि के उपरोक्त वचनों में इस तथ्य को विशेष रूप से हृदयङ्गम कराने का यत्न किया गया है। एक बात स्मरण रखिये वैदिक धर्म जिस–जिस जीवन पद्धति को हमारे सामने रखता है इसका आदि पवित्रता है और अन्त

* द्रष्टव्य ऋग्वेद 8/48/14

पात्रता है। महर्षि के उपरोक्त वचन में व्यक्ति के जीवन की पवित्रता का संदेश उपदेश दिया गया है। इसी पवित्रता से मानवों में पात्रता आती है। जिस समाज के व्यक्तियों में पात्रता ही न हो, वे जीवन में क्या कर सकते हैं और क्या बन सकते हैं ?

आज की शिक्षा में विचार का महत्व है, आचार का नहीं। वैदिक शिक्षा पद्धति में Headmaster वा Principal नहीं थे, आचार्य हुआ करते थे।

महर्षि का उपदेश है किसी को अभिमान न करना चाहिए। "छल कपट व कृतघ्नता से अपना ही हृदय दुःखित होता है, तो दूसरे की क्या कथा कहनी चाहिए ?"

बालकों में आरम्भ से ही ऐसे संस्कार भरने चाहिए कि वे कुटिलता युक्त व्यवहार से स्वाभाविक रीति से घृणा करें अर्थात् ऐसा व्यवहार उनकी प्रवृत्ति के प्रतिकूल हो, उन्हें ऐसा व्यवहार अरुचिकर लगे। इस दिशा में उनका पग उठे ही नहीं।

'आर्यों का शिष्टाचार'

"बड़ों को मान दे, उनके सामने उठकर जाके उच्चासन पर बैठावे, प्रथम नमस्ते करें।" आज विश्व भर में बड़ों के सामने खड़ा होने की रीति तो है परन्तु, इसमें वह माधुर्य व रस कहाँ जो आर्यों के शिष्टाचार में हैं। आर्य लोग तो विद्वान् साधु महात्मा, माता–पिता व बड़ों के चरण स्पर्श करके अपने को धन्य मानते हैं। कई राजनेता चरण छूने पर बड़ा नाक भी चढ़ाते हैं। भला जब बड़ों के सामने छोटों के खड़ा होने व उठने की रीति पर लोगों को आपत्ति नहीं तो चरण स्पर्श पर क्यों है ? जीवन का रस नम्रता में है। बड़ों

Scanned with CamScanner

का सत्कार करने से कृतज्ञता का भाव व गुण सम्पन्नता में वृद्धि होती है।

ऋषि लिखते हैं : "विरोध किसी से न करें। सम्पन्न होकर गुणों का ग्रहण और दोषों का त्याग करें। सज्जनों का संग, दुष्टों का त्याग, अपने माता पिता और आचार्य की तन, मन और धनादि उत्तम पदार्थों से प्रीतिपूर्वक सेवा करें।" बुराई से लड़ाई और बात है और वैर भाव और बात है। ऋषिवर मानव हृदय को शिव सङ्कल्पों का केन्द्र देखना चाहते हैं :–

सभी के भले की करो कामनाएँ ।
भरो विश्व में प्रेम की भावनाएँ ।।

सम्पन्नता में व्यक्ति इतराने लग जाता है। यही से गिरावट का आरम्भ होता है। ऋषि सम्पन्नता के साथ गुण सम्पन्नता को जोड़ने का आदेश देते हैं। माता, पिता व आचार्य की सेवा से क्या मिलता है, यह मस्तिष्क की बात नहीं। हृदय की बोली को हृदय ही समझता है। हम आरम्भ में ही ऋषि के वचन उद्धृत करके बता चुके हैं कि इस पद के अधिकारी कौन हैं ? माता–पिता व आचार्य को ऋषि उपर्युक्त रीति से सम्मानित व समादृत देखना व करवाना चाहते हैं। आचार्य ऋषि दयानन्द विद्या को महत्व देते हैं परन्तु विद्या से अधिक महत्व उन्होंने चरित्र को दिया है।

'व्यवहार भानु' में ऋषि प्रश्न उठाते हैं, क्या अविद्वान् महात्मा बन सकता है ? श्री महाराज उत्तर देते हैं कि अविद्वान् महात्मा

Scanned with CamScanner

भले ही न बने, धर्मात्मा बन सकता है।" महर्षि के इस भव्य भाव को पाठक हृदयङ्गम करेंगे तो विश्व का बड़ा कल्याण होगा। माता पिता का धार्मिक होना विशेष महत्व रखता है। अपने आचरण के कारण ऐसे माता पिता व आचार्य अपनी सन्तान व शिष्यों के आदर के पात्र हैं।

चरित्र निर्माण

महर्षि का आर्षनाद है :– यान्यस्माकं सुचरितानि तानि त्वयोपास्यानि नो इतराणि* इस आर्ष वचन का "यह अभिप्राय है कि माता पिता आचार्य अपने सन्तान और शिष्यों को सदा सत्योपदेश करें और यह भी कहें कि जो जो हमारे धर्मयुक्त कर्म हैं उन उनका ग्रहण करो और जो जो दुष्ट कर्म हों उनका त्याग कर दिया करो। जो जो सत्य जानें उन उनका प्रकाश और प्रचार करें।"

चरित्र–निर्माण की उत्तम विधि और कोई नहीं है। इससे हृदय की उदारता का भी परिचय मिलता है।

खानपान कैसा हो ?

महर्षि ने शिक्षा के साथ खानपान की शुद्धता को जोड़ा है। वह लिखते हैं :– जिस प्रकार आरोग्य, विद्या और बल प्राप्त हो, उसी प्रकार भोजन छादन और व्यवहार करें – करावें, अर्थात् जितनी क्षुधा उससे कुछ न्यून भोजन करें। मद्य–मांसादि के सेवन से अलग रहें।" खाना जीने के लिए है, न कि जीना खाने के लिए।

---

* द्रष्टव्य तैत्तिरीय उपनिषद् शिलावल्ली 11

Scanned with CamScanner

संसार में जितने ,व्यक्ति अकाल व भुखमरी से मरे हैं, उससे कहीं अधिक लोग अधिक खाने से मरे हैं। महर्षि सात्विक आहार पर बल देते हैं। यही मानव का स्वाभाविक व वैज्ञानिक भोजन है।

शाकाहारियों के बच्चें हों अथवा मांसाहारियों के यदिं उनके सामने फल, फूल, अन्न व मांस अण्डा आदि रखें जावें जो एक भी बच्चा मांस अण्डे की ओर न जावेगा। सब बच्चे फल फूल की ओर आकृष्ट होंगे। इससे स्पष्ट है कि मानव का स्वाभाविक भोजन फल फूल अन्न आदि है। जिन प्राणियों का मांस मनुष्य भक्षण करता है, वे सब शाकाहारी हैं तथा बकरी, भेड़, भैंस, गाय, ऊँट आदि। मांसाहारी मांस भक्षण करके Secondhand (दूसरी श्रेणी का) शाकाहारी बनता है। वह शाकाहारी से बने शरीरों को खाता है और शाकाहारी अन्न फल आदि का सेवन करके प्रथम श्रेणी (First Hand) का शाकाहारी बनता है। ईसाई मन्तव्यों के अनुसार आदम अदन के उद्यान में रखा गया। बूचड़ खाना वहां अड़ोस पड़ोस में नहीं था। उद्यान की उपज ही उसका निश्चित किया गया। न जाने फिर हजरत आदम के पवित्र भोजन को मनुष्य ने मांस आदि से कैसे दूषित कर दिया। आरोग्यता बल तथा विद्या का वर्धक जितना अन्न, फल, दूध, धृत, व दही आदि है उतना कोई और पदार्थ नहीं। 'Milk is a perfect food. 'दूध पूर्ण भोजन है यह सर्वमान्य सिद्धान्त है। इसकी अवहेलना मनुष्य मात्र के लिए घातक है। मांसाहार की दूषित प्रवृत्ति ने मानव को हिंसक बना दिया है। 'Wholesale slaughter of animals creates in man a

Scanned with CamScanner

collousness which results in out-bursts of all sorts of animal passions."* अर्थात् पशुओं के व्यापक संहार ने हमें पाषाण हृदय बना दिया है।

व्यवहार की बातें

छोटे व्यक्तियों के लिए बड़ी बड़ी बातें भी छोटी होती हैं और बड़े व्यक्तियों के लिए छोटी–छोटी बातें ही बड़ी होती हैं। महर्षि दयानन्द ने मूर्ति पर चूहे को चढ़ते देखा तो हृदय परिवर्तन हो गया। जीवन की दिशा ही बदल गई।

न्यूटन के सामने एक सेव के पेड़ से एक फल गिरा। न्यूटन ने यह दृश्य देखा। छोटी–सी घटना थी परन्तु इसने पृथ्वी के आकर्षण के सिद्धान्त को सिद्ध कर दिया और इस छोटी–सी घटना का विज्ञान के प्रवाह पर स्थायी प्रभाव पड़ा।

ऋषिवर बालक को सद्व्यवहार सिखाने के लिए छोटी–छोटी बातों पर बल देते हैं।

(1) नीचे दृष्टि कर ऊँचे–नीचे स्थान को देखकर चले।

(2) वस्त्र से छानकर जल पीवें।

(3) सत्य से पवित्र करके वचन बोले।

(4) मन से विचार के अचारण करें।[1]

---

*Vedic Culture. page 112

1. द्रव्टव्य अथर्ववेद 12/1/1

Scanned with CamScanner

जिनकी आयु बड़ी है वे अपने बाल्यकाल का स्मरण करें तो वे इस बात की पुष्टि करेंगे कि नीचे न देखकर चलने के कारण ही बालक–बालिकाएँ प्रायः गिरते व चोट खाते हैं।

वस्त्र से छानकर जल पीने की बात तो वैज्ञानिक एवं उपयोगी है ही। वायुःदूषण रोगों का कारण है। यह विश्वव्यापी समस्यायें सब राष्ट्रों के लिए एक चुनौती है। ऋषि ने इसी वैज्ञानिक सच्चाई का यहाँ प्रकाश किया है।

वाणी का महत्व है। सत्यवाणी से विश्व–हित होता है। अण्ड–बण्ड बोलने से, मिथ्या भाषण से किसी का भी हित नहीं होता। सत्य एक महाव्रत है। सत्य योग का एक आवश्यक अंग है। सत्य बहुत बड़ा तप है। पृथ्वी को धारण करने वाले अटल नियमों में सत्य सर्वप्रथम है।

"सत्यं बृहद् ऋतम्उग्रम्"

महर्षि किसी कवि का निम्न पद देकर सत्यार्थप्रकाश के द्वितीय समुल्लास को समाप्त करते हुए भाव विभोर होकर माता–पिता को पुनः एक निर्देश करते हैं :

माता शत्रुः पिता बैरी ये बालो न पाठितः ।
न शोभते सभामध्ये हंसमध्ये[1] बको यथा ।।[2]

---

[1]विद्यार्थियों को इसी प्रकार के अन्य व्यवहारों की शिक्षा देने के लिए आर्यसमाज शिक्षा सभा अजमेर ने आचार्य दत्तात्रेय आर्य द्वारा रचित "आचार सहिता" नाम की छोटी पुस्तिका प्रकाशित की है।

[2]द्रष्टव्य चाणक्यनीति 2/11

Scanned with CamScanner

वे माता और पिता अपने सन्तानों के पूर्ण बैरी हैं, जिन्होंने उनको विद्या की प्राप्ति न कराई। वे विद्वानों की सभा में वैसे ही शोभित नहीं होते हैं जैसे हंसों के बीच में बगुला।

महर्षि लिखते हैं कि माता–पिता का परम धर्म है, कर्त्तव्य कर्म व कीर्ति का सत्कर्म है कि वे निम्नगुणों से सन्तान को विभूषित करें। तन, मन व धन इसमें लगावें :–

(1) विद्या (2) धर्म (3) सभ्यता एवं (4) उत्तम शिक्षा।

ई वैदिक पुस्तकालय मुम्बई

आचार्य धर्मपाल शास्त्री

सम्पर्क- 9029421718

Scanned with CamScanner

हमारा प्रिय सत्यार्थप्रकाश

(1)

हमारे गुरु का आशीर्वाद, हमारे ऋषि का अमर विधान ।
मिटाकर जग का विषम विषाद, करेगा वही विश्व–कल्याण ।।
इष्ट फल देगा नित्य नवीन, कल्पपादप का पुष्पाभास ।
करे वह असत्–विचार विहीन, हमारा प्रिय "सत्यार्थ प्रकाश" ।।

(2)

निगम का आगम का अवतार, भव्य भावों का भुवि भण्डार ।
प्रेम के पथ का पारावार, ज्ञान का गुण का रम्यागार ।।
चमकते जिसमें रत्न अनेक, नित्य प्रति पाते विविध विकास ।
सत्य का सागर बस वह एक, हमारा प्रिय "सत्यार्थ प्रकाश" ।।

(3)

विविध पंथों का तामस तोम, भरा था भू पर भ्रम भरपूर ।
अखिल आच्छादित था वर व्योम, न कर सकता था कोई दूर ।।
गगन में हुआ ज्ञान विस्फोट, किया अज्ञान अंधेरा नाश ।
असत् पर मारी भारी चोट, हमारा प्रिय "सत्यार्थ प्रकाश" ।।

(4)

किया द्रुत खण्ड खण्ड पाखण्ड, चलाकर तेज तर्क का तीर ।
आक्रमण हुआ प्रभूत प्रखण्ड, दम्भगढ़ गिरा सहित प्राचीर ।।
विलखते हैं मतवादी आज, करें कैसे किसकी अब आश ।
असत् पर गिरा गर्ज कर गाज, हमारा प्रिय "सत्यार्थ प्रकाश ।।

(5)

"सूर्य" में रहे रश्मियाँ सात, यहाँ चौदह पूरे उल्लास ।
"सूर्य" करता न प्रकाशित रात, सतत यह देता ज्ञान प्रकाश ।।
"सूर्य" पर छाते घन बरसात, ग्रहण में होता भारी ह्रास ।
किन्तु "सत्यार्थ" सदा अभिजात, हमारा प्रिय "सत्यार्थ प्रकाश" ।।

-: रचयिता :-

(डॉ० सूर्यदेव शर्मा शास्त्री, साहित्यालंकार, एम. ए. डी. लिट्.)

अजमेर

Scanned with CamScanner

सुन्दर, साहित्य और सस्ते साहित्य प्रचार की योजना में सहयोग दीजिए

आर्य समाज अजमेर के निष्ठावान् विद्वान् डॉ. सूर्यदेव जी की 22 हजार रूपयों की उदार सहायता के कारण आर्यसमाज अजमेर ने 50 हजार रुपये व्यय करके सत्यार्थ प्रकाश ग्रन्थमाला के 15 भागों की 75 हजार प्रतियां (प्रथम संस्करण), लागत से भी कम मूल्य पर वितरित की हैं।

क. इसी ग्रन्थमाला के समान ऋषि दयानन्द तथा वैदिक सिद्धान्तों के सम्बन्ध में हिन्दी अंग्रेजी ट्रेक्सट।

ख. स्वामी जी के पत्र व्यवहार पर आधारित उनके कार्य और विचारों का संकलन।

ग. आर्य समाज अजमेर के गत 100 वर्षों का इतिहास जिसमें ऋषि दयानन्द के अन्तिम वर्षों से सम्बन्धित समाज के अभिलेखों से प्राप्त विवरण।

उपर्युक्त एवं आवरण पृष्ठ संख्या 2 पर लिखित साहित्य के प्रकाशन में आर्थिक सहायता देने वाले सज्जनों के संबंध में प्रत्येक पुस्तक में निम्न प्रकार से उनके प्रति आभार व्यक्त किया जावेगा।

* पाँच सौ रुपये से एक हजार रुपये तक दान देने वालों के नाम का उल्लेख।
* एक हजार रुपये से तीन हजार रुपये तक देने वाले दान दाताओं का संक्षिप्त परिचय।
* तीन हजार रु. से ऊपर देने वाले दान दाताओं का चित्र और परिचय।

दयानन्द शोध पीठ के प्रकाशन

दयानन्द स्नातकोत्तर कॉलेज में दयानन्द शोध पीठ की स्थापना हो चुकी है। प्रति वर्ष उसकी ओर से नियमित रूप से महर्षि दयानन्द के सिद्धान्तों एवं मन्तव्यों पर महत्त्वपूर्ण शोध तथा उपयोगी साहित्य का प्रकाशन किया जा रहा है।

इसका उद्धृत साहित्य निम्न प्रकार है :—

		मूल्य
1	महर्षि दयानन्द पत्रों के दर्पण में	50.00
2	नासीद सृष्टि विज्ञान एवं दशवाद रहस्य	
3	त्रयी विद्या	
4	सार्वभौम वैदिक धर्म	
5	महर्षि दयानन्द की राष्ट्रीय धार्मिक एवं सामाजिक मान्यताओं की प्रासंगिकता	

प्राप्ति स्थान — **आर्य समाज, अजमेर**

Scanned with CamScanner